अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

सागर को भी पावना बना बढ़ चला आध्यात्म जगत का महासागर

-केरल की मानों सम्पूर्ण प्रकृति ने की महातपस्वी की अभिवन्दना

-लगभग चैदह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री पहुंचे वेत्तामुक्क

-एफ.के.एम. आॅडिटोरिय में पधारे आचार्यश्री ने एकत्व की साधना का दिया मंत्र

-के.एस.एस.पी.यू. के सदस्यों को भी प्राप्त हुआ आचार्यश्री का मंगल आशीर्वाद

12.03.2019 वेत्तामुक्कु, कोल्लम (केरल): जन-जन के मानस को पावन बनाने वाले जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा के प्रणेता, अध्यात्म जगत के महासागार आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगलवार को प्रातः की मंगल बेला में अमृतपुरी (परयकडवु) स्थित माता अमृतानंदमयी मठ परिसर से मंगल प्रस्थान को तैयार हुए तो मठ के साधक श्रीरामकुमार सहित अन्य साधक आचार्यश्री के समक्ष अपने हार्दिक भावों और परंपरानुसार विभिन्न प्रकार के फलों से भरे थाल को लेकर उपस्थित हुए और मंत्रोच्चार करते हुए आचार्यश्री के समक्ष अर्पित किया। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी मधुर मुस्कान के साथ उनकी भावनाओं को स्वीकार कर और मंगल आशीष प्रदान कर अगले गंतव्य की ओर बढ़ चले। आचार्यश्री जैसे श्रद्धालुओं के अनुरोध पर उनके घरों आदि के आसपास पधार कर उन्हें कृतार्थ करते हैं मानों उसी प्रकार सागर की भावनाओं को स्वीकार कर आचार्यश्री ने सोमवार को सायं सागर के तट पर विराजकर मानों उसे पावन बनाया।

आचार्यश्री मठ परिसर से आगे बढ़े तो ऐसा लग रहा मानों केरल राज्य की संपूर्ण प्रकृति अपनी क्षमता और श्रद्धा के साथ महातपस्वी के अभिवादन को समर्पित दिखाई दे रही थी। मंद बयार, अपने-अपने फलों से लदे नारियल और केले के वृक्ष, फूलों की खिलती कलियां और सागर से उठने वाली लहरों की मधुर ध्वनि मानों मानवता के मसीहा की अभिवन्दना कर रही थी। वृक्ष आचार्यश्री को सूर्य के सीधे आतप से भी बचाने में भी अपनी महती भूमिका निभा रहे थे। मार्ग में एक स्थान पर वाटरवे में उपस्थित नाव अपने-अपने गंतव्य की ओर रवाना होने के लिए तैयार खड़े थे। प्रकृति का यह दृश्य आचार्यश्री के दृष्टि का भी विषय बना। इसके उपरान्त आचार्यश्री ग्रामीण विहार मार्ग से राजमार्ग पर पधारे और लगभग चैदह किलोमीटर का विहार कर वेत्तामुक्कु स्थित एफ.के.एम. आॅडिटोरियम परिसर में पधारे।

इस परिसर में आयोजित मंगल प्रवचन कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी अपने आप में अकेला होता है। व्यवहार में आदमी दो या अनेक भी हो जाता है। कितनों के साथ रहता है। पारिवारिक, सामाजिक जीवन जीता है तो वह अपने आपको अनेक के रूप में भी अनुभव कर सकता है। अनेक व्यक्ति साथ में रह सकते हैं, साथ में संबंधित होकर जीवन जी सकते हैं। इन सबके बावजूद भी आदमी अकेला होता है, आत्मा अकेली होती है। क्योंकि प्राणी अकेला उत्पन्न होता है और एक दिन अकेला ही अवसान को प्राप्त हो जाता है। अकेला ही अपने कर्मों का फल भोगता है और सुख-दुःख को प्राप्त करता है। आदमी को पारिवारिक व सामाजिक जीवन जीते हुए भी एकत्व की भावना रखने का प्रयास करना चाहिए और अपनी आत्मा के कल्याण का प्रयास करना चाहिए।

इस परिसर में के.एस.एस.पी.यू. (केरल स्टेट सर्विस पेंशनर्स यूनियन) के सदस्यों के तहसील स्तरीय सम्मेलन में उपस्थित लोगों के आग्रह पर आचार्यश्री ने उनके कार्यक्रम में उपस्थित होकर उन्हें पावन प्रेरणा प्रदान की तो उपस्थित लोगों ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी प्रणति अर्पित कर आचार्यश्री से पावन आशीष प्राप्त किया।